RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 44 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 6 अप्रैल 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

समझने का फेर तकलीफ देता है

चन्दन सिंह रावत से बातचीज

चायना वार के बाद तेजम प्रमुख केन्द्र था

भारत-चीन युद्ध के बाद तेजम से आगे सड़क बनाने को गति मिली

युद्ध ने व्यापार और जमीदारी उन्मूलन ने भूमि छीन ली तो स्थिति डामाडोल हो गई

'खड़कू गीता' बूबू को रामायण, गीता का ज्ञान था और वह वैद्यगिरी भी जानते थे

कार्यालय प्रतिनिधि

बात और चीजों को समझना भी कुशलता है। समझने का फेर तकलीफ देता है। कई बार अवरोध दिखने वाली बातें हमारे विकास में सहायक होती हैं। विकास और विनास का यह क्रम चलता रहता है। इस प्रकार के तर्कों से जूझते हुए अपना रास्ता बनाने वाले तेजम के चन्दन सिंह रावत से आज की खास बातचीज है। जिसमें वह थल-मुनस्यारी मुख्य मार्ग पर स्थित 'तेजम' सहित रोचक जानकारियों से अवगत करा रहे हैं।

इससे पहले इनके बारे में जानते हैं- मिलम में एक हुए खड़क सिंह रावत। अपने जमाने के इण्डो-तिब्बत व्यापार के प्रमुख व्यक्तियों में थे। गीता, रामायण का ज्ञान और उसका वाचन करने वाले खड़क सिंह जी वैद्यगिरी भी कर लेते थे, जिस कारण 'खड़कू गीता' या 'गीता' नाम से पहचान मिल गई। आयुर्वेद के जानकार होने के कारण यह इलाज भी कर देते। व्यापार का जमाना था और बताते हैं तब दिल्ली में कहीं इनका सम्पर्क था जिससे यह दवाई की खुराक मंगवा लिया करते थे। स्थानीय स्तर पर भी जड़ी-बूटी का प्रयोग करते। धर्मपरायण होने के कारण इन्होंने अपने पुत्रों के नाम- देवराम सिंह, हरीराम सिंह, दयाराम सिंह, श्रीराम सिंह रखा। आज भी तेजम में इनके कुनबे की पहचान 'गीता' या 'खड़कू गीता' का परिवार के रूप में है। इन चार भाईयों में देवराम सिंह रावत के सुपुत्र हुए- प्रहलाद सिंह और चन्द्रमोहन सिंह। प्रहलाद सिंह के सुपुत्र हुए- चन्दन सिंह, डॉ. प्रद्युमन सिंह, लक्ष्मण सिंह और ईश्वर सिंह। इसी प्रकार चन्द्रमोहन रावत जी के हुए गजेन्द्र सिंह और गम्भीर सिंह रावत। श्री चन्दन सिंह रावत का जन्म 1952 में मिलम में हुआ। साकेत कालोनी हल्द्वानी में निवासरत श्री रावत और श्रीमती जमुना रावत की विवाहित सुपुत्री दीपिका और नीलिमा के अलावा सुपुत्र- नगेन्द्र रावत हैं।

मिलम में जन्मे श्री चन्दन सिंह बताते हैं सन् 1961 तक तो माइग्रेशन स्कूल व्यवस्था में पढ़ाई की व्यवस्था थी। जोहार घाटी में कक्षा 5 तक ही माइग्रेशन वाले स्कूल सीमित थे। घरों की तरह ही स्कूल भवन भी पक्के पत्थरों के बने थे, जोहार घाटी की कई विभूतियां इन्हीं स्कूलों की देन हैं। बाद में तेजम में सरकारी प्राइमरी, जूनियर हाईस्कूल खुले उसमें

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

श्वेतकेतु को महापुरुष बनाने वाली सुवर्चला

सूर्यकान्त बाली

इतिहास के कुछ फैसले समझ नहीं आते। इतिहास ने गार्गी को खूब महत्व दिए, इस हद तक कि आज भी सारे देश को गार्गी नाम याद है। इतिहास ने मैत्रेयी को भी उचित महत्व दिया। पर सुवर्चला को इतिहास ने क्यों नहीं वैसा महत्व दिया? इतिहास जिन्हें अपने बहीखाते में दर्ज करवा दे, वे वास्तव में कालजयी व्यक्तित्व होते हैं। इसलिए यकीनन गार्गी और मैत्रेयी इतिहास के बड़े व्यक्तित्व हैं। पर उतने ही बड़े व्यक्तित्व सुवर्चला को हमारे मानस पटल पर इतिहास ने वैसे क्यों नहीं नहीं आंका, इसका कारण हमें समझ नहीं आ रहा, जबकि सुवर्चला का दार्शनिक व्यक्तित्व उतना ही बड़ा था, जबकि जितना गार्गी और मैत्रेयी का। बल्कि सुवर्चला के बारे में हमें सूचनाएं इन दोनों विचारक-नारियों से कुछ ज्यादा ही मिल जाती हैं।

सुवर्चला आचार्य श्वेतकेतु की पत्नी थी, जिसे श्वेतकेतु ने स्वयंवर में प्राप्त किया था। महाभारत का सन्दर्भ (शान्ति पर्व, अध्याय 220) जस का तस मान लें, तो सुवर्चला देवल नामक ऋषि की पुत्री थी। हमारे देश में देवल नाम काफी जाना पहचाना रहा है। अपने समय के एक प्रखर विद्वान देवल मंत्रकार भी थे और वे स्वयं असित नामक ऐसे पिता के पुत्र थे, जिन्होंने अपने सात्विक जीवन का कारण बहुत प्रसिद्धि पाई, यहाँ तक कि मंगलाचरण के श्लोकों में जिनका नाम आने लगा। देवल के एक छोटे भाई थे धौम्य जो पाण्डवों के पुरोहित थे और बहुत प्रसिद्ध हुए। चूँकि श्वेतकेतु का समय महाभारत युद्ध के सवा सौ-डेढ़ सौ साल बाद का है, इसलिए पाण्डवों के समकालीन धौम्य के बड़े भाई होने के कारण देवल को सुवर्चला का पिता मानने में कुछ इतिहासकारों को कठिनाई आ सकती थी। इसलिए सम्भव है कि स्वामिनी सुवर्चला नामक तेजस्वी स्त्री को देवल की पौत्री या प्रपौत्री कहने के बजाए पुत्री कहने में स्वयं सुवर्चला और उनके जीवन-कथाकारों को ज्यादा अच्छा लगा हो। पर इतना तय है कि देवल दीर्घजीवी रहे होंगे और सुवर्चला उन्हीं की देखरेख में बड़ी हुई।

ऐसा लगता है कि सुवर्चला अपने समय की एक अति सुन्दर महिला भी रही होगी। अन्यथा महाभारतकार को उसका विचारक चरित्र बताते हुए यह कहने की जरूरत न होती कि वह न तो कद की छोटी थी (नातिह्स्वा), न वह ज्यादा लम्बी थी (नातिदीर्घा) और न ही शरीर से दुर्बल थी (नातिकृशा)। पर सुवर्चला के प्रसिद्धि अपने सुन्दर शरीर नहीं, प्रखर मस्तिष्क के कारण थी और इसका प्रथम सार्वजनिक परिचय उन्होंने अपने स्वयंवर की शर्त के रूप में दिया। महाभारत के आसपास के समय के बारे में हम काफी कुछ बताते रहे हैं। हालांकि महाभारत से डेढ़-दो सौ वर्ष पूर्व ही सूर्या सावित्री ने विवाह संस्कार का कायाकल्प कर दिया था, पर शर्तों के आधार पर विवाह होने की हजारों सालों की परम्परा भी अभी बदस्तूर जारी थी। सो अपने विवाह के प्रति चिन्तित पिता को सुवर्चला ने अपने शादी की अजीब-सी शर्त बता दी कि वह उससे विवाह करेगी, जो अन्धा हो और आंख वाला भी हो- अन्धायमां महाप्राज्ञ देहयनन्धाय वै पितः।

शर्त अजीब थी। हो सकता है कि पिता को इसका मर्म समझ में आ गया हो। पर उन्होंने पूछा जरूर कि एक ही व्यक्ति अन्धा और आँखों वाला कैसा हो सकता है? क्या तुम पगला गई हो? सुवर्चला अपनी शर्त पर डटी थी। उसने अपने पिता से कहा कि मैं पागल नहीं हो गई हूँ और आप जिन ब्राह्मणों को मेरे साथ विवाह के योग्य मानते हो, उन्हें बुलवा लीजिए, मैं उनमें से अपने लायक पति चुन लूंगी। जिसकी पुत्री इतनी सूक्ष्म विचारशील हो, उस पिता की प्रतिक्रिया की कल्पना आप कर सकते हैं। देवल ने ऐसे अनेक ब्राह्मण कुमारों को बुलवा लिया, जिन्हें वे सुवर्चला के लायक मानते थे। पर सुवर्चला का पति बनने के प्रत्याशियों की योग्यताओं के बारे में बताते वक्त उन्होंने जो कहा, वह इतना ज्यादा महत्वपूर्ण है कि महाभारतकालीन समाज के स्त्री-पुरुष सम्बन्धों पर उसमें से एक गम्भीर टिप्पणी सामने आती है, जिसकी चर्चा हम अनेक बार कर चुके हैं। अन्य अनेक गुणों के अलावा देवल नले तीन जरूरतों पर भी बल दिया- एक कि जो भी बुलाए जाएं, वे व्यक्ति 'अकुटुम्ब' अर्थात अविवाहित हों, दो कि वे सभी ब्राह्मण श्रेष्ठ यौन आचार वाले हों (योनिगोत्र विशोधितान) और तीन कि इन सभी ब्राह्मणों के माता-पिता का सही तौर पर पता हो (मामृतः पितृतः शुद्धान)। कुन्ती पुत्र कर्ण और जबाला पुत्र सत्यकाम के उदाहरणों के सन्दर्भ में इसका अर्थ क्या है, बताने की जरूरत नहीं और इसी से यह भी जाहिर है कि क्यों आचार्य श्वेतकेतु ने ब्राह्मणों के लिए कठोर सामाजिक नियमों की व्यवस्था की थी।

खैर, लौटकर सुवर्चला की ओर आए। स्वयंवर में अपने योग्य पति सुवर्चला को चुनना था। ब्राह्मण आ जुटे और उन सभी सुवर्चला अपनी शर्त बता दी कि

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

उपलब्धि के गीत और सरकार

उत्तराखण्ड सरकार इन दिनों में 'उपलब्धि के चार साल बेमिशाल' बताते हुए अपनी प्रशंसा कर अपनी ही पीठ थपथपा रही है। चुनाव से पहले बचे एक साल में जिस प्रकार का भरपूर शो प्रदेश में होने जा रहा है उसकी सच्चाई समझ आ रही है। मुख्यमंत्री पुष्कर धामी कह रहे हैं- 'ये चार साल केवल उपलब्धियां नहीं, बल्कि आगामी विधानसभा चुनाव की सियासी रणनीति भी शामिल थी। विकास और विचार दोनों के संगम है।' दूसरी ओर विपक्ष की ओर से नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य कहते हैं- 'सरकार के चार साल पूरे होने पर वह अपना श्वेतपत्र जारी करे। प्रदेश की वास्तविक स्थिति भी जनता के सामने रखनी चाहिए।'

सरकार चाहे कोई हो, किसी की भी, वह उपलब्धि भरी ही होनी चाहिये। उपलब्धियों के मानक क्या हों इस पर सार्थक बहस हो। उपलब्धि केवल अपने पार्टी के झण्डे-डण्डे-बैनर उठाने वाले, अपने कार्यकर्ता, अपने पसन्द के ठेकेदार, अपने ही कार्य नहीं होते हैं। उपलब्धि का मतलब सम्पूर्ण समाज को किस तरह की दिशा और दशा में छोड़ दिया गया है यह सब भी देखना है। दरअसल कुछ समय से होने यह लगा है कि सरकारों का मलाल और मतलब इतना भर रह गया है कि वह अपने चाहे काम को भला और दूसरे के काम को बुरा साबित कर रही हैं। इसी प्रकार विपक्ष सही काम को भी सही कहने से बचता है। जबकि पक्ष-विपक्ष के होने का मतलब है इन दोनों की उपस्थिति का उचित परिणाम जनता को मिले।

देश और प्रदेश में सरकारों का आलम यह हो चुका है कि वह अपने को लोकप्रिय बताने के लिये विज्ञापनों का सहारा लेने लगी हैं। अपने को उजागर करने के लिये सत्ता का ऐसा भोग होने लगा है कि सारी कलाकारी इनके लिये होने लगी है। आयोजनों का मतलब इतना भर रह गया है कि लोक कलाकार के नाम पर सरकार के गीत गाए जाएं। नेताओं की वाहवाही की जाए। ऐसे में कलाकार की धार पैनी नहीं हो सकती बल्कि वह चाटुकारिता करती है। जब किसी की उपलब्धि होती है तो उसे बताने के लिये गीत गाने की कोई आवश्यकता ही नहीं होगी। हर भली चीज को भली कहा जाएगा। नेता और सरकार को अपनी उपलब्धि के गीत गवाने का सीधा सा मतलब है वह अपना प्रचार करवाने के लिये ताकत लगा रही है।

उत्तराखण्ड के परिप्रेक्ष्य में देखें तो अब साल भर इन्तजार जनता को भी है जब अगला चुनाव होगा। ऐसे में उपलब्धि गीत का मतलब भी सीधा सा है सरकार के ठाट में रहने वाले भरपूर लाभ लेना चाहेंगे और विपक्ष भी अपनी रीस/खीज को उतारेगा। इस लाभ लेने और रीस उतारने के पूरे खेल में समाज हित का असली कार्य हो नहीं पाता है। जो कुछ हो रहा होता है उसमें यही तलाश होती है कि किसका कितना प्रचार हो रहा है। प्रचार-प्रसार की इस आड़ में चाटुकारिता करने वाले, दलाली करने वाले अपना घर भरते हैं। इसलिये उपलब्धि के ऐसे गीतों को समझा जाना चाहिये।

उपलब्धि के लिये ढोल बजाने की जरूरत नहीं होती, वह दिखाई देती है। इसका प्रभाव लम्बे समय तक होता है। जो सच होता है उसे चाहे कोई कितना झुठलाए वह डिग नहीं सकता।

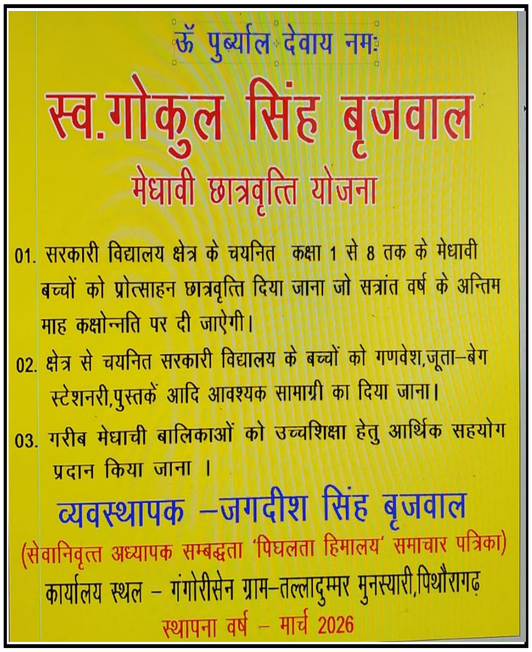

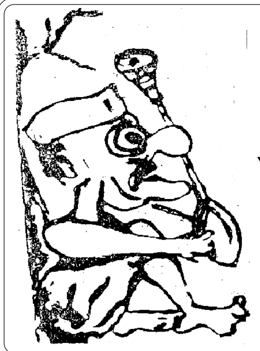

फसक

दाज्यू, गैस सिलैण्ड के लिये धुंधकारी हो रही ठैरी

चमचम दिखने धुंआधार होना पड़ता है बल

दाज्यू, पश्चिम एशिया में चल रही गड़बड़ की आंच अपनी रसोई तक है। दाज्यू, गैस सिलैण्ड के लिये धुंधकारी हो रही ठैरी। लाइन में लगने के बाद भी जब सिलैण्ड नहीं भरा तो भुप्पन ताऊ ने लोड़योव कर दी बल। क्या जो कहें, किसको कहें? चमचम होने के लिए धुंआधार होना पड़ता है बल।

अपने राजदा ठीक ही कह गये हैं- 'धुंआधार काम हो रहा है। इसी लिये हमने धामी को पहले धाकड़ कहा था, अब उन्हें धुरन्धर कहेंगे।' दाज्यू, हमारे शहर में दबादब निर्माण कार्य हो रहा है और रोड फैलकर दूर से दिखाई देने लगी हैं। दाज्यू, वैसे भी अब जमाना धुंआधार का ही ठैरा। इजराइल-ईरान के बीच कितनी धुंआधारी मची, पूरा जमाना हिलने लगा। अपने मोदी ज्यू ने भी हाईलेवल मीटिंग में ईंधन-ऊर्जा और उर्वरत आपूर्ति की जानकारी ली है। दाज्यू, बहुत खुशी हो रही है सबसे लम्बी सरकार चलाने का इतिहास भी मोदी ज्यू ने रच डाला है। अपने धुरन्धर धामी ने भी कैबिनेट में विभागों का बंटवारा कर धमाल कर रखा है। हमें अब कोई खतरा नहीं लग रहा है। चप्पूदास भी कह रहा है- 'सारे चौराहे चमक जाएंगे और गोवर गैस से इन्जन चालू हो जाएगा।' दाज्यू, चमचम दिखने से बहुत फर्क भी पड़ता है बल। कल क्या जो होगा, किसने देखा। हाथोंहाथ धिरक्योव कर डालो। नैनीताल-भीमताल में बहुत हल्ला मचा हुआ है कि मंत्री बनने के लिये एक नेता ने गिफट आदि दिया था। भगवान जाने कौन क्या दे रहा है। मांगों को लेकर पीआरडी जवानों ने सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। परेड ग्राउण्ड से जुलूस निकाल रहे लोगों को पुलिस ने रोका।

दाज्यू, हल्द्वानी में अपनी पत्नी को ठगकर एक साल से फरार पति गिरफ्तार हो चुका है। लव मैरिज करने वाले संदीप गोयल ने यशा के नाम से आगरा में दस लाख रुपये का लोन ले लिया था बल। किस्त चुकाने का नम्बर आया तो वह फरार हो गया और अब जाकर अपने जीजा के घर से पकड़ में आया।

दाज्यू, दुनिया इतनी धुंआधार हो चुकी है कि कोई किसी की सुनने को राजी नहीं। देहरादून के प्रेमनगर थाना क्षेत्र में छात्रों के दो गुटों में वर्चस्व की लड़ाई में बीटेक के छात्र की हत्या कर दी गई। वनराजियों के सीधे कहे जाने वाले भगतिरवा गाँव में भी सगे भाई की हत्या कर दी गई। किमखोला ग्राम पंचायत के वनराजी गाँव में हत्यारोप में सगे भाई, कथित चाची और उसके दो पुत्रों को पुलिस ने पकड़ा लिया। दाज्यू, एसओजी टीम ने पिथौरागढ़ में चैकिंग अभियान में बीए पढ़ने वाले दो छात्रों को पौने चार किलो चरस के साथ पकड़ लिया। स्थानीय कैम्पस के पढ़ने वाले बालक अपने जुगाड़ में लगे थे बल। किस-किस को रोका जाए? एसटीएफ और नेशनल साइबर क्राइम कॉर्डिनेशन सेन्टर की गूगल बैठक में बताया गया कि उत्तराखण्ड में हेलीकॉप्टर सेवा के द्वारा चारधाम यात्रा करने वाले श्रद्धालुओं के को धोखाधड़ी से बचाने के लिये भी फोर्स तैनात होगी। बिहार से चारधाम यात्रा की फर्जी बुकिंग हो रही थी बल।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

समझने का फेर....

प्रथम पृष्ठ का शेष

लम्बे समय तक घास के छप्पर वाली छत थी, जिसमें कक्षाओं का संचालन होता था। उन झोपड़ियों में ही कुर्सी-मेज सब होता। बकायदा टीचर्स क्वार्टर भी बने थे। समर्पित गुरुजनों की देखरेख में सबको अवसर मिले। स्कूल बहुत कम थे और प्राइमरी परीक्षा का सेन्टर भैंसकोट था जबकि कक्षा आठ बोर्ड का सेन्टर बेरीनाग में हुआ करता था। हम साथी लोग मिलकर मनकोट में कमरा लेकर रहते और अपने गांव से ही खाना बनाने वाले साथी भी साथ ही ले जाते थे। चन्दन सिंह जी के पढ़ाई का सिलसिला तेजम, मुनस्यारी और फिर अल्मोड़ा डिग्री कालेज रहा।

इनके माइग्रेशन के गाँव का विवरण इस प्रकार है- मल्ला जोहार क्षेत्र में मिलम, बार्डर पास, फिर मुनस्यारी क्षेत्र में जलथ, उसके बाद तल्ला जोहार की घाटियां। तेजम जहाँ 1962 के बाद स्थाई तौर पर रहना पड़ा। स्थाई तौर पर तेजम आने वाले परिवार जो प्रकृति से जुड़े थे, अतीत की कई चीजें खोई तो कई चीजें प्राप्त कीं। आज भी इनके जेहन में अपनी संस्कृति के वह दिन बसे हैं।

वह बताते हैं भारत-चीन युद्ध के बाद हालात बदलने लगे। तब तक तेजम तक ही गाड़ी आती थी। चायना वार के बाद 1964 के आसपास तेजम प्रमुख केन्द्र था। उस समय के हिसाब से इसका बाजार भी था और मुनस्यारी व दूरस्थ क्षेत्र से जिसने भी मोटरवाहन से यात्रा करनी होती वह तेजम आकर रुकता। इससे पहले गाड़ी रुकने का स्टेशन थल और शामा में रहा। चायना हमले के बाद रास्ते बनने लगे, रोड कटिंग में समय लगा। रावत जी बताते हैं- पहले जमीदारी प्रथा में हमारी काफी भूमि थी और भूमि जोतने वाले 'अधेली' यानी फसल का हिस्सा उनके पास पहुंचा जाते थे। बचपन में देखा है- पीठ में लादकर या घोड़े के द्वारा अनाज घर तक पहुंचता था। जमीदारी उन्मूलन में भूमि चली गई। एक ओर युद्ध में व्यापार थम गया और जमीदारी उन्मूलन में भूमि छिन गई तो स्थिति डामाडोल हो गई। तब तक पढ़ाई करने वाले भी व्यापार में ही अपना समय लगाते थे। सन् 1967 में जब क्षेत्र के लोगों को भोटिया जनजाति घोषित किया गया तो परिस्थिति देखते हुए नौकरी के हिसाब से पढ़ने लगे। उन दिनों में तो किसी प्रकार की जानकारी भी नहीं मिल पाती थी। कोई साथी बाहर जाकर सुनता कि अमुक जगह भर्ती है या पद रिक्त है तो एक-दूसरे को बताते थे।

अल्मोड़ा से बीएससी, एम.ए. अर्थशास्त्र के अलावा बीएड करने वाले चन्दन सिंह जी ने 1975 में बैंकिंग सेवा शुरु की। स्टेट बैंक बागेश्वर में प्रथम नियुक्ति के बाद जुलाई 2012 में मैनेजर के रूप में हल्द्वानी से सेवानिवृत्त होकर अपने परिवार के साथ समय व्यतीत कर रहे हैं। श्री रावत सेवानिवृत्त होने के बाद उत्तराखण्ड ग्रामीण बैंक हल्द्वानी में 5 साल वित्तीय जागरूकता केन्द्र भी अपनी सेवाएं देते रहे। इससे सम्बन्धित जानकारी व जागरुकता के लेख पिघलता हिमालय में उनके द्वारा प्रकाशित करवाए जाते थे। समाज में चल रही उथल-पुथल को बारीकी से जानने वाले रावत जी अपने बचपन के दिनों से तुलना करते हैं- तेजम में बचपन के खेल कंचे, कबड्डी, गिल्लीडंडा था। गर्मियों में साथियों संग जाबुका नदी में जी भर तैरना फिर कुछ देर के लिये किनारे पत्थर, रेते पर बैठ कर धूप का आनन्द लेने की प्रक्रिया ये आज भी हम सभी पुराने साथियों को रोमांचित कर जाता है। प्रकृति के साथ रमने वाले कई अच्छे तैराक भी बने। वह कहते हैं- जिन बातों को आज परेशानी के रूप में देखा व समझा जा रहा है वह तो आदत में सुमार था। परिस्थितियों के अनुसार बच्चे-बूढ़े अपने समय को जी रहे थे। ये हमारे समझने का फेर है। क्योंकि जिन्होंने परेशानी नहीं देखी होती है वह कठिन समय में घबरा जाते हैं। समय के साथ बदलाव होता चला जाएगा लेकिन असली धार उसी में होगी जो ईमानदार होगा। सचमुच प्रकृति के संघर्षों को उत्सव रूप में देख चुके रावत जी और इनके जैसे और भी सज्जन हैं, इनकी क्षमता और देशभक्ति की भावना का सकारात्मक प्रभाव समाज में हमेशा रहता है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जंगल बचाने को झुमाधुरी को भेंट

लोहाघाट। ग्रामसभा पाटन-पाटनी और राइकोट महर के जंगलों को बचाने के लिये इन्हें झुमाधरी को भेंट कर दिया जायेगा। मजगाँव में ग्रामीणों की बैठक में जंगलों के अवैध कटान पर चिन्ता जताते हुए यह निर्णय लिया गया। झुमाधूरी मेला समिति के अध्यक्ष मोहन पाटीन की अध्यक्षता में हुई बैठक में तय किया गया कि कोई भी व्यक्ति बिना सरपंच की अनुमति के जंगल में प्रवेश नहीं करेगा।

चम्पावत कैम्पस गेस्ट फैकल्टी भरोसे

चम्पावत। सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय का चम्पावत कैम्पस पूरी तरह गेस्ट फैकल्टी के भरोसे चल रहा है। 1996 में जिले में महाविद्यालय खुला और 2023 में इसके कैम्पस का दर्जा दे दिया गया लेकिन स्थायी प्राध्यापकों तैनाती न होने से कई तरह की अड़चन आ रही है। अभी 12 सौ छात्र-छात्राएं कैम्पस में अध्ययनरत हैं। कैम्पस के प्रभारी निदेशक डॉ.सिमरन का कहना है कि रिक्त पदों के लिए विवि के माध्यम से शासन को प्रस्ताव भेजा गया है।

होकरा में शराब पर लगेगा जुर्माना

थल। तेजम तहसील के होकरा ग्राम पंचायत के लोगों ने गांव को शराब मुक्त बनाने का संकल्प लेते हुए शराब बेचने वाले पर 50 हजार जुर्माना लगाने का फैसला लिया है। प्रधान सन्तोष कुमार की अध्यक्षता में हुई बैठक में ग्रामीणों ने कहा कि शराब के बढ़ते चलन से युवा पीढ़ी बर्बाद हो रही है जिस कारण यह सख्ती जरूरी है। विवाह या अन्य सामूहिक आयोजनों में भी शराब परोसने पर 25 हजार का जुर्माना व व्यक्ति का सामाजिक बहिष्कार का निर्णय लिया गया।

परिक्रमा

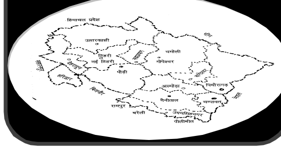

फचैऽक

मार दिनी पैद हुणै पैली, चेलियन कैं आघ्व लोग
कसि मति ऐ मन्खि कैं, पुरी गो तनर बाव भोग
पुरी गो तनर बाव भोग, चेलि न होली बुसी जाल
यसी सोच रौली जब, अणब्याग्र रौल तन्र च्याल
चेलि भोवहुं इज बणलि, य बात तो सोचि न कैली
चेलि देखि किलै बौइनी, मार दिनी पैद हुणै पैली।

गणेश पाण्डेय

शौका यूथ एण्ड विजनेस कॉनक्लेव

हल्द्वानी। रविवार 12 अप्रैल 2026 को जोहार शौका केन्द्रीय समिति द्वारा शिव सुन्दरम बैंक्वेट हाल दो नहरिया में प्रातः 9 बजे से प्रथम जोहार शौका यूथ एण्ड बिजनेस कॉनक्लेव 2026 का आयोजन किया जा रहा है। कॉन्क्लेव स्वरोजगार और स्टार्टअप करने वाले युवा शौकाओं को आपस में सम्वाद स्थापित कर एक मजबूत कॉमन प्लेटफार्म के गठन में सहायक होगा। साथ ही उनके अनुभवों से आम जन भी लाभान्वित होंगे। जोहार शौका केन्द्रीय समिति हल्द्वानी के अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह जंगपांगी ने बताया कि इसमें कृषि, बागवानी, कुटीर और ऊनी उद्योग, पशुपालन, डेयरी, पोल्ट्री, मत्स्य पालन, होटल, होमस्टे, ट्रैवल एण्ड टूर, साहसिक खेल, एमएसएमई, बैंकिंग और फाइनेंस आदि सेक्टर के विषय विशेषज्ञ इन युवाओं का मार्गदर्शन करेंगे। उन्होंने सभी से युवाओं और बिजनेस पर केन्द्रित इस कॉन्क्लेव को सफल बनाने की अपील की।

बनभूलपुरा में फार्म बंटे और छानबीन

हल्द्वानी। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार बनभूलपुरा में प्रधानमंत्री आवास योजना के लिए डोर-टू-डोर व 6 कैम्पों से सात हजार फार्म वितरित किए गए जबकि जमा होने वाले फार्मों की संख्या काफी कम है। राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव प्रदीप मणि त्रिपाठी ने बताया कि कोर्ट के निर्देशानुसार बनभूलपुरा रेलवे भूमि अतिक्रमण प्रकरण में 6 सार्वजनिक स्थानों पर कैम्प लगाकर पीएम आवास योजना के बारे में बताया गया।

फार्म वितरण और जागरूकता अभियान के बाद अब राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा फार्मों की स्कूटनी की जा रही है। इसके अलावा इन सभी प्रभावितों का सोशल व फाइनेंशियल रिपोर्ट भी तैयार हो रही है। इस पूरी छानबीन के दौरान यह भी बताया जा रहा है कि कई लोगों की अन्यत्र भूमि या भवन थे जो अपने किरायेदार को बनभूलपुरा वाला मकान बेचने के फिराक में थे। इस प्रकार की सूचनाओं में कितनी सच्चाई है इसकी भी छानबीन हो रही है।

फिलहला इस पूरी तैयारी में यह साफ दिख रहा है कि रेलवे भूमि खाली होगी और बड़ी संख्या में लोग हटेंगे। इनके लिये आवास योजना है, जो जबरन कर रहे थे वह इससे भागने को मजबूर होंगे।

जमरानी बांध से अतिरिक्त सिंचाई होगी

हल्द्वानी। जमारानी बांध बहुउद्देशीय परियोजना, जो हल्द्वानी काठगोदाम बैराज से 10 किमी अपस्ट्रीम में गोला नदी पर प्रस्तावित है, का निर्माण कार्य वर्ष 2024 में प्रारम्भ हो चुका है, इस सिंचाई जल का डायवर्जन काठगोदाम बैराज से किया जाना है। काठगोदाम बैराज से बायीं ओर गौलापार नहर निकलती है और दायीं ओर गौलावार मुख्य नहर निकलती है, जो हल्द्वानी और आसपास के क्षेत्रों में सिंचाई करती है, जमरानी बांध परियोजना के अन्तर्गत कोल टैक्स चौराहे से निकलने वाली गौलावार फीडर नहर एक मुख्य नहर है जहां से हरिपुरा बौर जलाशय की ओर जाती है और पाहा फीडर नहर किच्छा बैराज की ओर जाती है। उत्तर प्रदेश राज्य के साथ हुए एमओयू के क्रम में हरिपुरा जलाशय से जिला रामपुर को, और किच्छा बैराज से जिला बरेली को सिंचाई हेतु बांध से जल भेजा जाना है। इसके साथ उसिंनगर जिले को भी नहरों से ही सिंचाई जल दिया जाना है। परियोजना निर्माण के पश्चात नैनीताल, उधमसिंह नगर, बरेली एवं रामपुर में 57065 हेक्टेयर क्षेत्र में अतिरिक्त सिंचाई किये जाने का लक्ष्य है। अपर जिलाधिकारी ने नहर निर्माण कार्य निरीक्षण किया।

तेजम-बांसबगड़ में शराब का विरोध

नाचनी। तेजम और बांसबगड़ में शराब की दुकान खोलने का जबर्दस्त विरोध हुआ है। ब्लाक प्रमुख कविता महर के नेतृत्व में समकोट, मलौन, राया, भैंसखाल और होकरा समेत कई गांवों की महिलाएं तहसील मुख्यालय प्रदर्शन को पहुंची। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार नशा उन्मूलन अभियान के विपरीत काम कर रही है और युवा पीढ़ी को नशे की ओर धकेला जा रहा है।

19अप्रैल को खुलेंगे यमुनोत्री कपाट

रुद्रप्रयाग। यमुनोत्री धाम के कपाट आगामी 10 अप्रैल को अक्षय तृतीया पर दोपहर 12.15 बजे श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए जाएंगे। यमुनोत्री मन्दिर समिति द्वारा यमुना जयन्ती पर यमुनोत्री के शीतकालीन प्रवास स्थल खरसाली में विधि विधान से पंचांग गणना के बाद कपाट मुहूर्त निकाला गया।

कैलाश गहतोड़ी स्पोर्ट्स स्टेडियम

टनकपुर। दिवंगत विधायक कैलाश गहतोड़ी के नाम पर स्थानीय स्टेडियम का नाम रखा गया है। क्षेत्र के विकास के लिये स्व.गहतोड़ी द्वारा किये गये कार्यों को देखते हुए सीएम ने यह घोषणा की थी, जिसे शासन ने स्वीकृति कर दिया।

सफल हुए अनुज पन्त सम्मानित

लोहाघाट। यूपीएससी परीक्षा में ऑल इण्डिया में 69वीं रैंक प्राप्त करने वाले बाराकोट ब्लाक के छुलापैं गांव निवासी दिनेश पन्त श्रीमती मीना पन्त के पुत्र अनुज पन्त को विधायक खुशाल अधिकारी ने उनके घर जाकर सम्मानित किया।

सीमान्त में धन की बर्बादी के सिवा और हुआ ही क्या है : श्रीराम धर्मशक्तू

मुनस्यारी। सरकार के चार साल पूर्ण होने पर जिस प्रकार के आयोजनों की झड़ी लगी है, इस पर मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने तीखी प्रतिक्रिया देते हुए सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि इन वर्षों में सीमान्त में धन की बर्बादी के सिवा और हुआ ही क्या है? कहा जनहित में शिकायत का उत्तर पर अधिकारी नहीं दे रहे हैं। इन हालातों को कौन सी समझता कहा जाएगा?

हमेशा से मल्ला जोहार की ज्वलन्त समस्याओं को उठाने वाले श्री धर्मशक्तू ने उपलब्धि गिनाते हुए हो रहे एक आयोजन के लिये आयोजकों से कहा है कि सब जब जाहिर है कि सीमान्त के क्षेत्र के लोगों का शोषण विकास कार्यों में किस प्रकार की धन स्वीकृत न करना, घायल व्यक्तियों को किसी प्रकार की आर्थिक सहायता न देना, जंगली जानवरों द्वारा घरों को नुकसान पहुंचाने पर आर्थिक सहयोग न मिलने जैसे उदाहरण हैं। कहा कि गोरी गंगा में झूलापुल ट्राली निर्माण हेतु स्वीकृति के लिए एक छोटी सी धनराशि दोनों स्थानों लिए जिलाधिकारी महोदय के पटल पर सन् 2025 से लम्बित है। हमारे सीमान्त क्षेत्र के लोगों को वाइब्रेंट विलेज के अन्तर्गत विकास का लाभ नहीं मिल सका है।

अपनी नाराजी जताते हुए श्री धर्मशक्तू कहते हैं उनके द्वारा जनहित शिकायत पोर्टल पत्राचार ज्ञापन प्रेषित करने का भी उत्तर नहीं मिल पाता है। उदाहरण स्वरूप जब मैडम रीना जोशी जिलाधिकारी, श्री विनोद गोस्वामी और वर्तमान में श्री आशीष भट्ट हैं लेकिन किसी प्रकार पत्र का जवाब नहीं देते हैं। जनहित समस्याओं से सम्बन्धित इसके अतिरिक्त जो भी ज्ञापन उपजिलाधिकारी के माध्यम से भेजा जाता है उस पर क्या जो हो रहा हैपता नहीं। वह कहते हैं जनहित के मुद्दों का त्वरित निस्तारण हो तो इसे उपलब्धि माना जाएगा। इस ओर सरकार को ध्यान देना चाहिये। सीमान्त क्षेत्र की मूल समस्या पर विचार किया जाए।

टिहरी झील के कटाव और ब्लास्टिंग से बढ़ा खतरा, सुरक्षा दीवार झुकी

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

टिहरी झील से लगातार हो रहे कटाव का असर एक बार फिर चिन्यालीसौड़ क्षेत्र में दिखने लगा है। झील के किनारे सुरक्षा के लिए करीब चार वर्ष पहले बनाई गई गेविंग दीवार भू-धंसाव के चलते गंगोत्री हाईवे की ओर लगभग तीन मीटर झुक गई है। दीवार के झुकने से हाइवे और जोगत-देवीसौड़ मोटर मार्ग पर चौड़ी दरारें उभर आई हैं, जिससे स्थानीय लोगों में चिन्ता बढ़ गई है। पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष ने बताया कि टिहरी झील बनने के बाद से ही चिन्यालीसौड़ और आसपास के क्षेत्रों में भू-कटाव की समस्या बनी हुई है। मुख्य बाजार, गंगोत्री हाईवे और आवासीय भवन लम्बे समय से खतरे की जद में हैं। स्थानीय लोगों की मांग पर टीएचडीसी ने मुख्य बाजार के पास झील से हाईवे तक करीब 30 मीटर ऊंची सुरक्षा दीवार का निर्माण कराया था। करीब पांच करोड़ रुपये की लागत से बनी यह दीवार गुणवत्ता और निगरानी की कमी के कारण अब खतरे का कारण बनती दिख रही है। झील की ओर से हो रहे कटाव के चलते दीवार ऊपर से लगभग तीन मीटर तक झुक चुकी है। हाईवे किनारे लगा एक बिजली का पोल अब झुकी हुई दीवार पर टिका दिखाई दे रहा है, जो स्थिति की गम्भीरता को दर्शाता है। दीवार के झुकने से आसपास के क्षेत्र में गहरी दरारें पड़ गई हैं।

पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष का कहना है कि कई बार शिकायत करने के बावजूद अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है। ऐसे में बाजार और आवासीय भवनों पर भू-धंसाव का खतरा फिर से मंडराने लगा है, जिससे लोगों में दहशत का माहौल है। एक ओर टिहरी झील से हो रहा लगातार कटाव और दूसरी ओर निर्माण कार्यों के दौरान की जा रही कथित ब्लास्टिंग इन दोनों कारणों से चिन्यालीसौड़ और भटवाड़ी क्षेत्र के लोग असुरक्षा की भावना में जी रहे हैं। स्थानीय लोगों की मांग है कि सुरक्षा दीवार की तत्काल तकनीकी जाँच कर उसे मजबूत किया जाए और निर्माण कार्यों की सख्त निगरानी सुनिश्चित की जाए, ताकि किसी बड़ी दुर्घटना से पहले ही हालात को संभाला जा सके। लेकिन निर्माण की गुणवत्ता और निगरानी में कमी के कारण अब यह दीवार ऊपर से लगभग तीन मीटर तक झुक गई है। स्थानीय लोगों का कहना है कि कई बार शिकायत करने के बावजूद अभी तक कोई ठोस सुधारात्मक कार्रवाई नहीं की गई है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

श्वेतकेतु को महा....

प्रथम पृष्ठ का शेष

ब्राह्मणों की इस सभा में मेरा पति वही हो सकता है, जो साबित कर दे कि वह अन्धा भी और आँखों वाला भी है। (यद्यस्ति समितौ विप्रो अन्धोनध: स मे पति:) लगता है कि जो ब्राह्मण सुवर्चला की चाह में वहाँ आ जुटे थे, वे सामान्य कोटि के थे और उनमें से कोई भी वैसा दार्शनिक नहीं था जो सुवर्चला के इस कथन का मर्म समझ जाता। वे सभी सुवर्चला और देवल की कोसते हुए वापस लौट गए। पर कुछ वक्त बाद जब श्वेतकेतु को यह शर्त और स्वयंवर की घटना के बारे में पता पड़ा, तो वे समझ गए कि सुवर्चला कोई सामन्य स्त्री नहीं है। वे सुवर्चला के प्रति आदर से भर गए और देवल के पास आ पहुँचे।

बस यहीं से सुवर्चला नामक दार्शनिक का श्वेतकेतु नामक दार्शनिक के जीवन में प्रवेश होता है और इसी के साथ ही महारत में उन दो विशिष्ट सम्वादों का वर्णन है, जिनमें से सुवर्चला का चरित्र अपनी पूरी खूबी से आ उभरता है। देवल के आश्रम में आते ही श्वेतकेतु ने सुवर्चला से कहा कि मै। ही वह हूँ, जिसे तुम पति के रूप में पाना चाहती हो। श्वेतकेतु का सीधा तर्क था- मैं अन्धा हूँ, यही यथार्थ है, अन्धोहमत्र तत्वं हि। श्वेतकेतु ने कहा कि जिस परमात्मा की शक्ति से मनुष्य अपना जीवन चलाता है, देखता है, ग्रहण करता है, सुनता है, सूंघता है, बोलता है, विभिन्न वस्तुओं का स्वाद लेता है, वह ईश्वर ही सभी का वास्तविक मेत्र है। मैं भी इस जगत में उसी ईश्वरीय शक्ति के रूप में देखता हूँ, इसलिए वही मेरे वास्तविक नेत्र हैं और जिस लौकिक चक्षु से सामान्यत: मनुष्य सारे जगत को देखते हैं, मैं इस संसार को उन लौकिक आँखों से देखता ही नहीं, इसलिए मैं अन्धा हूँ।

सुवर्चला तो निहाल हो गई। उसे एक सामान्य सांसारिक किस्म के नहीं, विचारशील दार्शनिक पुरुष की तलाश थी, जिसे वह अपना जीवनसाथी बना सके। इसीलिए उसने अपने स्वयंवर के लिए अनोखी शर्त रख दी थी। श्वेतकेतु ने इसकी इस तलाश को सफल किया और उसने आह्लाद से भर कर श्वेतकेतु से कहा, मनसासि वृतों विद्वन, शेषकर्ता पिता मम। मैंने मन से तुम्हें पति स्वीकार कर लिया है और अब विवाह संस्कार की बाकी औपचारिकताएं मेरे पिता ही पूरी करेंगे।

अपने अनुरूप पति पा लेने का कितना अद्‌भुत तरीका सोचा था सुवर्चला ने। और श्वेतकेतु को पा लेने पर उसे वैसा ही गर्व हुआ होगा, जैसे आदर के भाव से भर कर श्वेतकेतु सुवर्चला की चाह में देवल के आश्रम में आए थे। सुवर्चला के जीवन की यह एक उपलब्धि थी। पर इससे भी बड़ी उपलब्धि उसे अभी हासिल होनी थी। हम जान चुके हैं कि विद्यापति के बाद श्वेतकेतु को खासा घमण्ड हो गया था। उसी घमण्ड को तोड़ने के लिए पिता उद्दालक ने अपने पुत्र के साथ लम्बा सम्वाद किया था और उन्हें 'तत्वमसि' नामक महावाक्य का मर्म समझाया था। पर लगता है कि सुवर्चला से विवाह के बाद श्वेतकेतु के जीवन में फिर एक दौर ऐसा आया, जब वे अपने स्वाध्याय मार्ग से भटक गए। क्यों भटक गए पता नहीं। हो सकता है कि सुवर्चला नामक विशिष्ट स्त्री को अपनी दार्शनिकता के बल पर पा लेने का घमण्ड इन पर हावी हो गया हो या हो सकता है, कोई और ही कारण रहा हो। यह भी हो सकता है कि उस समय प्रचलित दार्शनिक संगोष्ठियों में मिने वाली जय-पराजयों के कारण श्वेतकेतु पक्ष-विपक्षों में फंस गए हों। अलबत्ता वे अपने विचार मार्ग की मौलिकता से कहीं न कहीं भटके थे और सुवर्चला को यह सहन नहीं था कि उसके पति के बड़प्पन को कोई भी हानि हो। उसने एक दिन साफ-साफ कह दिया किमनेक प्रकारेण विरोधेन प्रयोजनम? क्रिया कलापैर्ब्रह्यर्षे ज्ञाननष्टोसि सर्वदा। आप जो कई तरह के विरोध में जा फंसे हो, उससे क्या मिलने वाला है? हे ब्रह्मर्षे मैं देख रही हूँ कि इन चक्करों में पड़ कर आपका ज्ञान लगातार नष्ट हो रहा है।

श्वेतकेतु की मस्तिष्क घड़ी का मानो अलार्म बज गया। सुवर्चला की इस चेतावनी के बची लम्बा सम्वाद चला। महाभारत के शान्ति पर्व के अध्याय 220 में यह लम्बा अध्यात्म सम्वाद सुरक्षित है, जो पैतालीस श्लोकों में फैला है। अद्‌भुत सम्वाद है यह। खुन्दकबाज कहते हैं कि यह सब बाद में वहाँ डाला गया है। हम बिना खुन्दक के ही यह मान लेते हैं। युधिष्ठिर-भीष्म के मुंह से सुवर्चला-श्वेतकेतु नामक उन पात्रों की हानि बताई गई है, जो भीष्म की मृत्यु के सवा-डेढ़ सौ साल बाद क्षितिज पर उभरे। पर महाभारत ही कौन से व्यास ने अकेले और एक ही पालथी में लिख दी। तीन-चार पीढ़ियों तक फैली उनकी टीम ने जो लिखा, उस पर खुन्दक वही कर सकते हैं, जिन्होंने तर्क पर पक्षपात का काला चश्मा डाल रखा है। आगे-पीछे की सभी घटनाएं भीष्म-युधिष्ठिर सम्वाद का हिस्सा बना दी गई हैं, जो जाहिर सी बात है उसे भी एक खास तरह की शैली का प्रयोग करने के तहत ही दिया गया है। पर सुवर्चला जैसी पात्र को, उसकी स्वयंवर कथा को, श्वेतकेतु को दिए उसके उद्‌बोधन को भीष्म के मुंह से कहलवाया गया तो जाहिर है कि महाभारतकार सुवर्चला जैसी विशिष्ट विदुषी के दार्शनिक जीवन को दो खास घटनाओं को रेखांकित करना चाहता है- एक कि सुवर्चला ने विद्वान और दार्शनिक पति को पाने के लिए भारी विचार-तपस्या कीक और दो, कि ऐसा पति पाने के बाद उसने उसे अपने रास्ते से भटकने नहीं दिया। यानी श्वेतकेतु जो थे, वे सुवर्चला के कारण थे, उससे अभिन्न हो जाने के कारण ही वे वैसे बन पाए।

(साभार नवभारत टाइम्स)

उमेश डोभाल स्मृति समारोह, कपिलेश भोज को सम्मान

अल्मोड़ा। दो दिवसीय उमेश डोभाल स्मृति समारोह में समसामयिक मुद्दों पर चिन्ता जताई गई। साथ ही जनपक्षीय पत्रकारिता पर मंथन हुआ।

सांस्कृतिक जुलूस के साथ आयोजन की शुरुआत हुई। चौघानपाटा से मालरोड होते हुए यह जुलूस जिला पंचायत सभागार पहुँचा, जहाँ उत्तराखण्ड जनसम्वाद का आयोजन किया गया। उपस्थित वक्ताओं ने जनपक्षीय पत्रकारिता की वर्तमान चुनौतियों और सामाजिक सरोकारों को मजबूत करने पर अपने विचार रखे। समारोह की अध्यक्षता गोविन्द पन्त 'राजू' व संचालन चन्द्रशेखर द्विवेदी ने किया।

इस अवसर पर रमेश जोशी, विभू कृष्ण, बल्लीसिंह चीमा, पी.सी.तिवारी, राजीवलोचन साह, जगदीश जोशी, सुरेश नौटियाल, मुकुल, प्रकाश पन्त, ईश्वर दत्त जोशी, विमल भारती, डॉ. निर्मल जोशी, आनन्द राणा ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

आयोजन के दौरान इस बार उमेश डोभाल स्मृति सम्मान साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए कपिलेश भोज को प्रदान किया गया। पर्यावरण संरक्षण के लिए किशन सिंह मलड़ा को राजेन्द्र रावत 'राजू' स्मृति जनसरोकार सम्मान दिया गया। जनपक्षीय नाटकों और जनगीतों के द्वारा समाज में जागरूकता फैलाने वाले रंगकर्मी यमुना राम को गिरीश तिवारी 'गिर्दा' सम्मान दिया गया। इस बार इलेक्ट्रानिक मीडिया के क्षेत्र में विजय रावत और प्रिंट मीडिया के लिए राजू सजवाण को जबकि भुवनेश्वरी जोशी प्रतिभा सम्मान बालिका वर्ग में टिहरी की मोनिका पंवार और अनिरुद्ध प्रतिभा सम्मान बालक वर्ग में पौड़ी के करण राज को प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉ.शेखर पाठक, जहूर आलम, लाकेश धस्माना, विजयबध न उप्रेती, जगदीश चन्द्र तिवारी, कपिल मल्होत्रा, हिमांशु लटवाल, नसीम अहमद, अमित उप्रेती, शिवराज कपकोटी, प्रकाश पाण्डे, नवीन बिष्ट, रोहित भट्ट, जयमित्र बिष्ट मौजूद थे।

ज्योतिष की बातें- 275

11 अप्रैल 2026 को बुध अपनी नीचराशि मीन में प्रवेश करेगा, जहाँ पर शनि से युति भी होगी, अत: बुध अभी निर्बल रहेगा। फलदीपिका के अनुसार बुध दूसरे, चौथे, छठवें, आठवें, दसवें व ग्यारहवें स्थान पर शुभ होता है अत: बुध बुद्धि, व्यवसाय, वाणिज्य, लेखन, साहित्य आदि अपने कारक विषयों में अगले 19 दिन कुम्भ, धनु, तुला, सिंह, मिथुन व वृषभ राशि के जातकों को शुभफल प्रदान करेगा।

यहाँ पर प्रत्येक ग्रह के गोचर का अलग-अलग स्वतन्त्र रूप से गोचरफल लिखा जाता है। यह स्थूलरूप से ही सही हो सकता है। व्यक्ति विशेष के सूक्ष्म फलित के लिए लग्न कुण्डली, महादशा आदि का विचार करना पड़ता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा

ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 163

अंग प्रत्यारोपण का कारोबार

एक मनुष्य के अंगों को दूसरे मनुष्य के शरीर में लगाने की टेक्नोलॉजी आ जाने के बाद चिकित्सा क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिर्वन हुआ। अब तो आंख, गुर्दा, लीवर, फेफड़े, हृदय, आतें आदि लगभग सभी अंग एक मनुष्य के शरीर से निकाल कर दूसरे मनुष्य के शरीर में व्यापक रूप से लगाए जाने लगे। कभी-कभी इन अंगों का दानदाता मिल भी जाता है लेकिन फिर भी इन अंगों की कीमत मार्केट में लाखों रुपयों में होती है। लेकिन ये अंग आते कहाँ से हैं, यह प्रश्न उत्पन्न होता है।

पहले छोटे-छोटे बच्चे खो जाते थे, बाद में कभी मिल भी जाते थे। अब तो बच्चा हो या बूढ़ा, स्त्री हो या पुरुष सभी के खो जाने की आशंका समान रूप से गम्भीर हो गई है। प्रतिवर्ष देश में लाखों लोग गायब हो जात हैं और उनका कुछ भी अता-पता नहीं चलता। राष्ट्रीय स्तर पर और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानव अंगों का कारोबार व्यापक रूप से फैला हुआ है जिसमें बड़े-बड़े राजनेता, डॉक्टर, उद्योगपति संलिप्त हैं। जिस टेक्नोलॉजी की खोज रोगियों के हित के लिए हुई थी आज वही टेक्नोलॉजी एक नये अपराध की जड़ बन चुकी है।

विचार यह भी करना चाहिए कि अंग प्रत्यारोपण कितना आवश्यक था, अंग प्रत्यारोपण से किसी रोगी को कितना लाभ हुआ, अंग प्रत्यारोपण सफल हुआ या नहीं? जो रोग पहले औषधि चिकित्सा से ही ठीक हो जाते थे उनके लिए अब डॉक्टर अंग प्रत्यारोपण की बात करने लगे हैं क्योंकि उनके अंग बेचने वाले माफियाओं से सम्बन्ध होते हैं। मेरे विचार से अंग प्रत्यारोपण नाम की चिकित्सा पद्धति तत्काल बन्द होनी चाहिए क्योंकि इससे रोगियों पर अत्याचार और उनका भयंकर शोषण हो रहा है।

-ओंकार नाथ कोष्टा

चारधाम यात्रा की हर जरूरी जानकारियां वेबसाइट पर मिलेगी

चमोली। बदरीनाथ-केदारनाथ मन्दिर समिति की वेबसाइट के द्वारा अब देश दुनिया के श्रद्धालुओं को चारधाम यात्रा व धामों में पूजा से सम्बन्धित हर जरूरी जानकारी उपलब्ध होगी।

बीकेटीसी की वेबसाइट को उच्चीकृत करने का काम चल रहा है। यात्रा शुरू होने से पहले वेबसाइट पर सभी जानकारियां मिलने लगेंगी। समिति के अध्यक्ष हेमन्त द्विवेदी ने बताया कि वेबसाइट को उच्चीकृत किया जा रहा है। इसके माध्यम से श्रद्धालुओं को मन्दिरों में पूजा व्यवस्था के अलावा सभी जानकारियां मिलेगी। जिससे यात्रा में सुविधा भी होगी।

विधायक हरीश धामी का ऐलान जनता की आवाज को न्याय मिलेगा

भाजपा के लिये चुनौती

धारचूला-मुनस्यारी विधानसभा सीट पर 2027 का चुनाव घमासान कैसा होगा, उसका आंकलन किया जाने लगा है। इसके लिये भाजपा किसी दमदाम का चयन कर रही है जबकि कांग्रेस नेता और विधायक हरीश धामी अपने अभियान में लगातार आगे बढ़ रहे हैं। उनका कहना है कि जनता की आवाज को न्याय मिलेगा और वह न्याय के लिये हमेशा लड़ते रहेंगे। उल्लेखनीय है कि विधायक धामी पहले ही उनकी विधान सभा में हुए भ्रष्टाचार की जांच के लिये मांग कर चुके हैं, विधानसभा सत्र के दौरान भी वह बोलने से नहीं चूके और धरना भी दिया। इस बीच न्याय की देवी कोटगाड़ी के दरबार जाकर भी अपील कर चुके हैं। विधायक के खुले ऐलान के बाद से भाजपा के नेता भी अपना रास्ता बनाने की जुगत में लगे हैं।

HIMALAYAN MUNSYARI STORE

Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani

(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सम्वेदनशील हिमनद झीलों की निगरानी

देहरादून। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने हिमालयी पारिस्थितिकी की सम्वेदनशीलता को दृष्टिगत रखते हुए राज्य में हिमनद झीलों से उत्पन्न सम्भावित आपदाओं के प्रभावी प्रबन्धन एवं जोखिम न्यूनीकरण के लिये वैज्ञानिक एवं तकनीक आधारित उपायों को अपनाने के निर्देश दिए हैं।

सीएम के निर्देशानुसार नेशनल ग्लेशियर लेक आउटबर्स्ट फ्लड, रिस्क मिटिगेशन प्रोग्राम के अन्तर्गत राज्य की 13 सम्वेदनशील हिमनद झीलों की निगरानी, जोखिम आकलन एवं न्यूनीकरण हेतु वर्किंग ग्रुप गठित किया गया है। इस ग्रुप का नोडल संस्थान वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी को नामित किया गया है। ग्रुप के सेन्ट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट, उत्तराखण्ड राज्य आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हाइड्रोलॉजी, उत्तराखण्ड अन्तरिक्ष उपयोग केन्द्र, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ रिमोट सेसिंग, नेशनल रिमोट सेसिंग सेन्टर तथा जियोलॉलिकल सर्वे ऑफ इण्डिया के विशेषज्ञों एवं वरिष्ठ भू-वैज्ञानिकों को सम्मिलित किया गया है। ग्रुप द्वारा परियोजना के अन्तर्गत आधुनिक निगरानी प्रणाली के विकास, प्रारम्भिक चेतावनी प्रणाली की स्थापना, अनुसंधान एवं तकनीकी अध्ययन तथा जोखिम न्यूनीकरण उपायों के समन्वित क्रियान्वयन का कार्य किया जाएगा।

भारत-चीन व्यापार अवधि 30नवम्बर तक बढ़ाने की मांग

धारचूला। भारत-चीन के बीच लिपुलेख दर्रे से होने वाले बहुप्रतीक्षित सीमा व्यापार को सुगम बनाने के लिये व्यापारियों ने तहसील प्रशासन के समक्ष अपनी मांगे रखी हैं। व्यापारियों ने तिब्बत की तकला कोट मण्डी में भारतीय व्यापारियों के लिए उचित दरों पर पर्याप्त संख्या में दुकानें और सुरक्षित गोदाम उपलब्ध कराने की मांग की है। भारत-चीन व्यापार समिति के अध्यक्ष जीवन सिंह रौंकली और महासचिव दौलत सिंह रायपा का कहना है कि लम्बे समय बाद सीमा व्यापार सुचारू होने की उम्मीद जगी है, ऐसे में तकलाकोट मण्डी में भारतीय व्यापारियों के लिये बुनियादी जरूरतों को पहले से देखना जरूरी है। व्यापारियों ने प्रशासन से कहा कि भौगोलिक कठिनाईयों को देखते हुए लिपुलेख दर्रे से 500 मीटर पहले तक सामान अपने वाहनों से पहुंचाना होगा, जबकि 500 मीटर की पैदल दूरी के लिए भारी सामान खच्चरों और अन्य जानवरों के द्वारा ले जाना होगा। मांग की कि लिपुलेख दर्रे तक सामना पहुंचाने के लिए उन्हें जानवर वालों और कारकूनों को ले जाने की अनुमति दी जाए। इसके साथ ही सरकार से आईएसटी में विशेष छूट देने की मांग की ताकि छोटे व्यापारियों को राहत मिले। प्रशासन ने व्यापारियों की मांगों को शासन तक पहुंचाने का आश्वासन दिया। एसडीएम से मिलने वालों में महेश ह्यांकी, चकर सिंह गर्ब्याल, अर्चना गर्ब्याल, अर्चना गुंज्याल, अजय गुंज्याल आदि थे।

भीमताल सीट पर मचने लगी घमासान

कैड़ा का स्वागत, पनेरू ने भरे गड्ढे

भीमताल विधानसभा सीट 2027 के चुनाव के लिये आक्रामक तेवर में दिखाई दे रही है। उबाल खाते नेता और उनके समर्थकों को देखते हुए यह माना जा रहा है कि 2027 के विधानसभा चुनाव में पार्टियों के टिकट होने से लेकर चुनाव तक पुलिस-प्रशासन को बहुत जूझना होगा। पोलिंग बूथ भी अतिसम्वेदनशील की स्थिति में होंगे।

बताते चलें कि भीमताल विधानसभा सीट भाजपा की झोली में रही है। पहले दान सिंह इस सीट पर विधायक बने। फिर निर्दलीय रामसिंह कैड़ा, जो भाजपा में शामिल हो गये। दूसरी बार भाजपा टिकट से कैड़ा विधायक बने। अब कैबिनेट मंत्री बनने के बाद उनकी टीम में जोश है। पार्टी की बात करें तो इसमें टिकट को लेकर रस्साकस्सी जारी है और रामसिंह का विरोध करने वाले भी कम नहीं हैं लेकिन जितने दमदार तरीके से वह अपना रास्ता बनाते रहे हैं उसे देख यही लग रहा है कि आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा की ओर से वही प्रत्याशी होंगे।

जिला पंचायत चुनाव के दौरान भीमताल में हुई झड़प भी कम चर्चा में नहीं है। कांग्रेस के तेज तर्रार नेता हरीश पनेरू लगातार जनता के बीच आवाज उठा रहे हैं। पिछले दिनों कांग्रेस के तमाम नेताओं ने बैठक कर इस बात के लिये मंथन भी किया कि उनकी पार्टी किसी स्थानीय को ही प्रत्याशी बनाए।

फिलहाल धामी कैबिनेट में शामिल हुए भीमताल विधायक राम सिंह कैड़ा का इन दिनों में स्वागत सत्कार हो रहा है। कालाढूंगी क्षेत्र पहुंचने पर नयागांव तिराहे पर उनका स्वागत किया गया। इसके अलावा भी जगह-जगह युवा मंत्री का स्वागत हुआ। दूसरी ओर पूर्व दर्जा मंत्री एवं राज्य आन्दोलनकारी हरीश पनेरू ने पदमपुरी-खुटानी धामरी मार्ग पर गड्ढे भरते हुए विरोध जताया और कहा मंत्री के दौरे से पहले स्वागत के लिये यह सब कर रहे हैं। उन्होंने स्थिति न सुधरने पर आन्दोलन की चेतावनी दी।

पिघलता हिमालय के बढ़ते कदमों की हार्दिक शुभकामनाएं-

ललितमोहन सिंह पांगती
शंकर निवास, भोटिया पड़ाव
हल्द्वानी

गिरीश सिंह वृजवाल
खुशदीप सदन, सुरभि कलोनी
मल्लीबमोरी, हल्द्वानी

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चौकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats **APNA GHAR** चौकोड़ी
मो. 9458920379, 6396098804
HOTEL RESTRO BANQUET
YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादक: श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)